दीदी की चुदाई भाग - 1

Hi Dear Readers of Antarvasna,

I am pulkit-19 belonging to north India. I belong to a very small family consisting of my dad and a 22 years old didi. 3 yrs back I got the unique opportunity to see my didi fucked by our tanent. We have a room on the roof top which my father rented to a 45 yrs old widower, Mr. Sameer Singh whom we call uncle. He was a pretty jolly type man working in a private company.Very soon he mixed up with all of us. Dad trusted him like younger brother. We did not have cable connection which he took only for us. His room and TV was at our disposal. We used to see TV by lying on his bed. He used to take us for drive every sunday.

I do not know when and how it happened but I noticed "***something"*** between didi and uncle. Whenever we see TV, didi used to lie between us. This was December 05, when I noticed this something in the quilt. When I noticed it few more times, I decided to leave them alone and verify. Next day when didi was out, I searched her room and was surprised to find hindi blue books with nude photos, dirty stories in open language. I was now convinced that Mr. Sameer Singh is no more my ***uncle*** but has become my ***Jijaji***. So dear friends I started following them and got the oppurtunity to see ***didi-jijaji*** on a Saturday night. Actually my dad visits his parents living in a village every saturday. To make the story real and sexy I shall narrate that night in hindi and presenting it in pdf format.

To dosto hazir hai bahan ki chudai bhai ki aankhon se……..

उस शनिवार को जब पापा गाँव गये तो मैंने शाम से ही सर दर्द का बहाना बना दिया और जल्दी **सोने** चला गया । दीदी ने अंकल के यहाँ टीवी देखने के लिये कहा तो मैंने मना कर दिया तो दीदी ने भी अपना जाना कैंसल कर दिया और अपने कमरे में चली गयी। मैं ***सो*** गया। रात 10 बजे के करीब जब अंकल को पता चला तो वे मुझे देखने आये। मेरे सर पर हाथ फेरते हुए बोले कि कोई खास बात नहीं है सो जा ठीक हो जायेगा और फिर दीदी से बोले **चल सीमा इसे सोने दे।** और मेरा दरवाजा बन्द करते हुए वे दोनों बगल के कमरे में चले गये। मैं चुपचाप उठा और दरवाजे पर कान लगा दिये।

इस बार काफी गैप हो गया ..आयेगी ..... मुझे अंकल की धीमी आवाज सुनाई दी

आज और रहने दो ...राजा की तबियत ठीक नहीं है...अगली बार पक्का.... दीदी फुसफुसाई

कोई खास बात नहीं है सर दर्द है सोयेगा तो सुबह तक ठीक हो जायेगा...

???????????

(c) 2008, www.antarvasna.com

टीवी के बहाने आ जाना....बहुत दिन हो गये हैं जान .....
उईईई...क्या करते हो.....यह दीदी की आवाज थी...शायद उसकी चूची दबायी थी
आज बहुत मन है...मैं दरवाजा खुला रखूंगा.....पुच्च.....चूमने की आवाज आयी
अच्छा बाबा देख लूंगी.....दीदी धीमे से बोली.....फिर अंकल चले गये.और दीदी वापस मेरे पास आ गयी। थोडी देर बाद बोली.....
नींद नही आ रही हो तो ऊपर चल... टीवी से मन बहल जायेगा ....
नहीं दीदी मेरे से उठा भी नहीं जा रहा...तू चली जा.....
अच्छा सो जा...मैं उपर जा रही हूँ कोई प्राब्लम हो तो फोन कर देना.....और वह चली गयी। मैने लगभग 15 मिनिट इंतजार किया फिर चुपचाप उठा और अन्दर की सीडी से उपर पहुंचा। अंकल के कमरे की एक खिडकी अन्दर खुलती थी। मैने खिडकी की दरार पर आंख टिका दी। अन्दर का सीन देखकर में सन्न रह गया। रजाई मे दोनों लिपटे हुए थे। अंकल ने उसे पूरी तरह से भींच रखा था और वे उसके होठ चूस रहे थे। रजाई के अन्दर का हाल भी साफ दिख रहा था। दीदी का सर अंकल के हाथ पर था और वे दूसरे हाथ से उसकी चूची दबा रहे थे । थोडी देर रगडने के बाद उन्होंने अचानक रजाई हटा दी। दीदी कुलबुलाई पर वह उनके कब्जे में थी। उन्होंने उसे अपनी टांगों मे भींच रखा था। उसकी सलवार चड्डी सहित नीचे खिसकी हुई थी तथा कुर्ता उपर। दीदी का बेदाग बदन मेरे सामने था। उसका दूधिया शरीर एक दम चिकना था। भूरे निपल वाली उसकी कसी हुई चूचियां तनी हुई थीं। चूत पर हल्की हल्की झांटों के अलावा शरीर पर कहीं भी बाल नहीं थे। एक दम चिकना बदन। उसने दोनों टांगें भींच रखी थी। अंकल ने जैसे ही उसके होट छोडे तो उसने एक लम्बी सांस ली...
क्या करते हो....थोडा सब्र तो करो.....
कैसे सब्र करुं ...इतने दिनों के बाद मिली है मेरी जान.....चल अब नंगी हो जा.....
अभी से.....ऐसे मजा नहीं आयेगा.....दीदी उसे चूमते हुए बोली..
चिंता मत कर...ऐसी मस्त चुदाई करूंगा कि याद रखेगी....देख लंड कैसे फनफना रहा है
ये तो हमेशा ही खडा रहता है .....दीदी शोखी से बोली....
तू है ही इतनी मस्त मेरी जान.....तेरी चूत के तो नाम से ही खडा हो जाता है.....
फिर भी..ये बार बार ठीक नहीं है.....
पर अंकल ने उसकी एक न सुनी और उसे नंगा करना शुरू किया। मेरी सांस रुक रही थी। दीदी का दूध जैसा गोरा और केले सा चिकना बद्न मेरे सामने था। मैं रोमांचित हो रहा था। चूत और चुदाई के बारे में सुना तो था पर देखने का मौका आज ही मिल रहा था वो भी अपनी प्यारी बहन की। उनकी बातों के खुलेपन से साफ था कि यह सब काफी पहले से चल रहा है। फिर अंकल लेटे लेटे ही नंगे हो गये। 45 साल कि उम्र में भी उनका शरीर गठा हुआ था। तभी मेरी निगाह उनके लंड पर पडी उनका 7' लम्बा और खूब मोटा लंड तना हुआ था।
हे भगवान.....इतने तगडे लंड से चुदेगी मेरी प्यारी बहन.....मैं सोच सोच कर मरा जा रहा था.....कैसे झेला होगा पहली बार...बहुत तडफी होगी.....
अंकल ने उसे फिर से लिपटा लिया और वह भी बेल की तरह लिपट गयी। वे उसकी चूची और गांड भींच रहे थे। फिर उन्होंने दीदी का हाथ अपने लंड पर रख जिसे उसने आराम से

(c) 2008, www.antarvasna.com

पकड लिया और सहलाने लगी। फिर अंकल उपर आये और टांगें चौडा दी। दीदी ने अपने पैर उपर उठा लिये। उसकी मख्खन जैसी चूत मेरे सामने थी। छोटी छोटी झांटों के बीच चमक रही थी। अंकल ने लंड दरार मे फेरना शुरू किया तो वो **आह्ह आअह्ह** करने लगी। थोडी देर रगडने के बाद उन्होंने लंड को चूत पर टिकाया और एक हल्का सा धक्का मारा। लंड का सुपाडा अन्दर समा गया। फिर उन्होंने अपने हाथ उसके दोनों ओर जमाये और लंड को कुछ एडजस्ट सा किया और फिर एक जोरदार शॉट मारा...लंड पूरा चूत में समा गया....दीदी के मुँह से एक आह निकली पर उनपर तो जनून सवार था..उन्होंने पूरा लंड बाहर खींचा और फिर एक जोरदार धक्का मारा...और फिर **पलंग की चरमराहट और दीदी की आह्ह आह्ह्ह के बीच चूत पर पडने वाली पट्ट पट्ट की आवाज से कमरा गूंजने लगा।** लगभग 10 मिनिट सीधे चोदने के बाद उन्होंने उसे घोडी बनाया और फिर गांड की तरफ से पेलना शुरू कर दिया। उसके चूतडों को भींचते हुए वह पूरी ताकत से चोद रहे थे। दीदी की आह्ह आह्ह और तेज हो गयी। थोडी देर बाद उन्होंने उसे फिर सीधा किया और तकिये ने नीचे से कंडोम निकाला.....

ले चडा इसे......दीदी मदहोश थी...उसने लंड पौंछा और कंडोम चडा दिया.....अंकल ने कपडे से उसकी चूत पौंछी और फिर टिका दिया। अंकल ने लंड चूत मे धीरे से उतारा और उसपर लेटकर चूमने लगे। चूमते चूमते वे उसकी चूची दबा रहे थे और साथ ही लौडा चूत मे हिला रहे थे.....

आअह्ह्ह मेरी जान ...क्या मस्त बदन है तेरा ...मजा आरहा है....

उउह्ह्ह...आअह्ह...अब जल्दी करो ना...

ले तो साली चल अब टांगें उठा ..... दीदी ने टांगें उपर उठा कर चौडा लीं अंकल ने लंड सैट किया और एक बार फिर कमरा गूंजने लगा....5 - 7 मिनिट पूरी ताकत से चोदने के बाद वे उसपर पड गये। दीदी ने भी टांगें सीधी करली। थोडी देर ऐसे लेटने के बाद वे उठे तो मैं भागकर नीचे आगया।

दीदी की चुदाई भाग - 2

हाय...अंतरवासना के पाठकों को पुलकित झा का नमस्कार। **दीदी की चुदाई भाग - 1** में मैंने बताया कि किस प्रकार मुझे अपनी 19 वर्षीय बहन को अपने ही किरायेदार से चुदवाते देखने का कई बार मौका मिला। हालांकि मैं ये सब छुप कर देखता था किंतु दीदी को पता चल गया। कुछ समय तक तो वह विचलित हुई पर फिर अंकल के समझाने पर मुझे अपना राजदार बना लिया। इससे तो उनकी समस्या ही हल हो गयी। अब तो जब भी पापा गाँव जाते अंकल नीचे आ जाते और मुझे दूसरे कमरे में भेज कर पूरे अधिकार के साथ दीदी को चोदते थे। यह सिलसिला 6 माह तक चला था कि अंकल का ट्रांसफर हो गया। दीदी एक दम से उदास हो गयी। शुरू में तो बहुत तडफती थी और मुझसे अपनी तडफ को शेयर करती थी। मुझसे वह पूरी तरह खुल चुकी थी। धीरे धीरे नार्मल होने लगी। मैने भी उसे समझाया कि पापा अब उसकी शादी की तैयारी कर रहे हैं। फिर पूरी कसर निकाल लेना। इस प्रकार एक वर्ष बीत गया। अब वह कॉलेज में आ चुकी थी और

(c) 2008, www.antarvasna.com

अपनी हवस पर काबू पा चुकी थी। किंतु ऊपर वाले को तो कुछ और ही मंजूर था। एक दिन पापा के एक एक्स बॉस का बेटा, 35 वर्षीय गौरव, किसी काम से हमारे शहर आया। पापा ने उसे अपने घर ही ठहरा लिया। उसकी व्यवस्था नीचे ही गैस्ट रूम में कर दी। पापा को ड्रिंक लेकर सोने की आदत थी। 10 बजे हम सब अपने अपने कमरे में चले गये। दीदी छत पर टहलने चली गयी। थोडी देर बाद वह लौट कर आयी तो उसका चेहरा लाल था और बहुत विचलित दिखाई दे रही थी। फिर मैं सो गया। सुबह उठा तो दीदी बदली हुई सी दिखायी दी। दोपहर जब मैंने कुरेदा तो उसने बताया कि उसने कल रात गौरव से चुदवाया है। मैं हैरान रह गया। गौरव भैया कल शाम ही तो आये हैं और इतने कम समय में दीदी को पटा भी लिया और चोद भी दिया। माना कि मेरी बहन एक साल से प्यासी थी पर कुछ ही घंटों में चुदवाने को तैयार हो गयी। मुझे हजम नहीं हो रहा था तो मैंने पूछा.....
दीदी अचानक इतने कम समय में...कैसे हुआ...डिटेल में बता....दीदी ने आंखें बन्द करलीं और कल की रात में खो गयी..

तो दोस्तो आगे दीदी ने जो बताया उसे उसी के शब्दों में मनोरंजक बना कर पेश कर रहा हूँ:

कल रात जब मैं छत पर टहल रही थी तो गौरव बाहर पेशाब करने आया और पेड की नीचे खडा होकर पेशाब करने लगा। स्ट्रीट लाइट में मेरी निगाह उसके लंड पर पडी। एक साल से जैसे तैसे अपने आप को संभाल रही थी कि उसके लंड को देखकर मैं विचलित होगयी और उसे एकटक देखती रही। हालांकि उसका लंड खडा नहीं था पर खडा होकर कैसा लगेगा यह मैं महसूस कर रही थी। मैं उसके लंड में ऐसी खोयी कि मुझे पता भी नहीं चला कि गौरव मेरी इस हरकत को देख रहा है। मेरी इस हरकत से उसका लंड तनने लगा तो उसने लंड को हिलाया तो मैं ***जाग*** गयी और घबडा कर भाग आयी। 12 बज तक मैं ऐसे ही करवटें बदलती रही। मेरी नींद गायब हो चुकी थी। मेरा गला सूखने लगा तो मैं उठी और किचन में पानी पीने गयी। तभी वहां गौरव आ गया। उसे देखकर मैं घबडा गयी और बाहर निकलने लगी तो उसने मेरा हाथ पकड लिया और मुस्कराने लगा....जब मैने हाथ छुडाने की कोशिश की तो वह बोला
नींद नहीं आ रही न ....मुझे भी नहीं आ रही है ....मेरे कमरे में आ जा...बातें करेंगे.....
क्क्क्यों .....मैं हकलाते हुए बोली
तूने ही तो उडाई है.....फिर पूछती है क्यों.....वह फिर मुस्कराया
मैने क्या किया है...
आ तो जा सब बताऊंगा..... मैने हाथ छुडाया और जाने लगी
मैं इंतजार कर रहा हूं.....फिर मैं अपने कमरे में आ गयी....मेरा दिल जोर जोर से धडक रहा था और गला सूख रहा था। एक साल से बन्द चूत फिर पनियाने लगी। मेरे से रहा नहीं जा रहा था...मैने चुदवाने का तय कर लिया और बाथरूम चली गयी और पेशाब करके चूत को साफ किया और उसके कमरे में चली गयी। वह मेरे इंतजार में ही लेटा था। मैं सर झुका कर उसके पास खडी होगयी तो उसने मेरा हाथ पकड कर रजाई में खींच लिया। मैं भी चुपचाप उसकी बाहों में चली गयी। आखिर चुदवाना तो था ही। वह भी

(c) 2008, www.antarvasna.com

जानता था कि मैं चुदवाने के लिये तैयार हूं। उसने अपनी एक टांग मेरे उपर लपेट ली और दनादन कई चुम्बन जड दिये और फिर मेरा चेहरा उपर उठाते हुए बोला.....

छत से क्या देख रही थी.....

जीईईई ...कुछ भी तो नहीं.....मैं हकलाते हुए बोली....

इसमें शरमाने की क्या बात है.....और उसने अपना एक हाथ मेरे बूब पर रख दिया और अपनी टांग से मेरे नीचे के बदन को अपनी और खींचा जिससे उसका लंड सीधे चूत से टकराया। मैने हटाने की कोशिश की पर असफल रही।

इसे ही देख रही थी ना....और उसने लंड का दबाब चूत पर बडाया.....मेरे मुँह से बोल नहीं फूट रहा था....अब उसने एक हाथ मेरी शर्ट में डाल दिया और पीठ सहलाने लगा। मैं एक लूज शर्ट व इलास्टिक वाला पजामा पहने थी। पीठ सहलाते सहलाते उसने ब्रा का हुक खोल दिया। मैं अभी भी उसकी बाहों में कसी हुई थी और चुदवाने के लिये तैयार थी। अब उसने पीठ वाला हाथ पजामे में डाला और चूतड भींचने लगा । मैं थोडा कुनमुनाई तो उसने हाथ से चूतड को और दबाया जिससे लंड का दबाव चूत पर और बढ गया। अब मेरे से सहन नहीं हो रहा था और मैं मरी जा रही थी। थोडी देर ऐसे ही रगडने के बाद उसने मुझे सीधा किया और अपना हाथ चूत पर रख दिया। मैंर हाथ हटाने की कोशिश की और पैर भींचे तो उसने हाथ से चूत को भींच दिया और बोला

ज्यादा नखडे क्यों कर रही है....मैं कुछ न बोली वह भी अच्छी तरह जानता था कि मैं चुदने के लिये ही आयीं हूं।

अब शरमाना छोड और खुल जा....तभी पूरा मजा आयेगा...वह उगली से चूत की दरार को कुरेदते हुए बोला। मेरी चूत गीली हो चुकी थी और अब मैं भी खुलकर मजा लेने के मूड में आगयी थी। मैने अपनी टांगें थोडी ढीली कर दी जिससे उसका हाथ आराम से चूत सहलाने लगा। अब मेरा सर उसके एक हाथ पर था और दूसरे हाथ से चूत सहला रहा था। उसने सर वाले हाथ से चूची दबाना शुरू किया और अपने होठ मेरे होठों पर रख दिये तो मैने भी अपना एक हाथ उसकी कमर में डाल दिया। उसके प्यार में सख्ती आ गयी और उसने होठों को कस कर चूसना शुरू किया तथा चूची भी जोर से दबाने लगा तथा चूत वाले हाथ में भी तेजी आ गयी। जैसे ही उसने अपनी एक उंगली चूत में घुसाई मैं उससे कस कर लिपट गयी। थोडी देर रगडने के बाद उसने मुझे ढीला किया और मेरे कपडे उतारने लगा तो मैने हल्का सा विरोध किया पर वह जारी रहा। पहले उसने मेरी शर्ट उतारी और फिर एक ही साथ नीचे से नंगा कर दिया और फिर उसने अपने कपडे उतारे। कमरे में बाहर से रोशनी छन छन कर आ रही थी जिसमें मैने उसके लंड पर नजर डाली। 7.5 इंच लम्बा और मोटा लौडा मेरी चूत की गहराई नापने के लिये फडफडा रहा था। अब बिना किसी इंतजार के मेरे उपर आया और अपने दोनों हाथ मेरे सीने के दोनों ओर जमाये तथा लंड चूत की दरार मे लगा दिया...मैंने आंखें बन्द करलीं और अपनी टांगें घुटने से मोड कर उपर उठाली.....उसने लंड चूत के छेद पर टिकाया और एक ही झटके में पूरा का पूरा चूत में उतार दिया। उसका लंड काफी मोटा और लम्बा था...मेरे मुँह से **आआअह्ह** निकली जिसे उसने अनसुना कर दिया और पूरा लंड बाहर खींचकर फिर एक जोरदार धक्का मारा...**आअह्ह्ह...धीरे...प्लीज.....**पर उसे कहां परवाह थी वह तो एक के बाद एक चोट मारने लगा...पलंग की चरमराहट और मेरी आह्ह आह्ह्ह के बीच चूत पर

(c) 2008, www.antarvasna.com

पडने वाली पट्ट पट्ट की आवाज से कमरा गूंजने लगा। मुझे बहुत मजा आ रहा था। उसकी हर चोट पहले वाली से ज्यादा ताकतवर होती थी। मैं बहुत भरी हुई तो थी ही सो ज्यादा चोट नहीं झेल पायी और लगभग 50 चोट मे ही झड गयी...लगभग 30-40 और चोट मारने के बाद वह झड गया और मेरे उपर ही पड गया। उसके लंड से निकलने वाला गर्म पानी मैं अपनी चूत में महसूस कर रही थी। 10 मिनिट ऐसे ही पडे रहने के बाद वह खिसककर बगल में आ गया। फिर आधा घंटे तक हम ऐसे ही पडे रहे। फिर मैं उठी और कपडे पहनने लगी तो उसने वापस हाथ पकड लिया और बोला...

अभी से क्यों पहन रही है.....

क्यों ...सोना नहीं है ?????

अभी से...और उसने मुझे वापस अपने उपर गिरा लिया और फिर बाहों में लेकर चूमते हुए बोला.....

अभी तो बस परिचय ही हुआ है....प्यार कहां किया है

सब कुछ तो हो गया..अब क्या बचा है?? अब मैं नार्मल हो रही थी मेरा सर उसके सीने पर टिका था और वह मेरे बालों से खेल रहा था।

अभी तो असली मजा लेना बचा है..मेरी जान..उसने मेरे बालों को पकड कर मेरा चेहरा उठाया और होठों पर चुम्बन जड दिया।

2 बज गये हैं अब और नहीं रुक सकती

अच्छा तो एक राउंड और ..... और फिर इससे पहले कि मैं कुछ बोलती वर मेरे उपर सवार हो गया। उसका लंड फिर तनने लगा। थोडी ही देर में मैं भी गरम होगयी और फिर उसने पहले से भी कहीं ज्यादा तगडी चुदाई की। वह पूरा लंड बाहर निकालता और पूरी ताकत के साथ शरीर के वजन सहित चूत पर पटक देता था। हर चोट पर लगता था कि मेरी कमर टूट जायेगी। लगभग 200 चोट मारने के बाद उसने लंड का सारा पानी चूत में उडेल दिया। मैं निढाल हो चुकी थी। सो जैसे तैसे कपडे पहने और अपने कमरे में आकर गिर गयी।

दीदी की चुदाई भाग - 3

गौरव को उसी दिन जाना था मेरा मन फिर उदास हो गया। गाँव में दादी की तबियत बिगड गयी सो पापा को दोपहर को ही जाना पडा। गौरव शाम को 5 बजे आया। मैने उसे चाय पिलाई और पुलकित को इशारा किया तो वह खेलने के बहाने बाहर चला गया। गौरव ने शायद इस इशारे को नोट कर लिया और बाहें फैला दी तो मैं दौड कर उनमें समा गयी। मेरी आंख भर आयीं।

क्या हुआ मेरी जान... वह चूमते हुए बोला। मैं और जोर से लिपट गयी। वह मुझे लेकर सोफे पर ले आया तो मैं उसकी गोद में सर रख कर लेट गयी। वह मेरी चूचियों से खेलने लगा।

आज जाना जरूरी है...आज और रुक जाते .....मैने उसकी तरफ प्यार से देखकर कहा

क्यों .....वह शरारत से बोला

ऐसे ही.....

(c) 2008, www.antarvasna.com

रुक तो सकता हूं पर एक शर्त है.....उसने चूची को थोडा जोर से दबाते हुए कहा
????????????
आज पूरी रात मेरी दुलहन बनकर रहेगी .....
कल की तरह ही आ जाऊंगी...पुलकित घर में है ना.....
उससे तो तू खुली है?? मुझे पता है.....वह आंख मारते हुए बोला
ये..क्क्याअ कह रहे हो....
हम पारखी नजर रखते है रानी.....देख अगर खुलने को तैयार हो तो बोल.....
मैने शरमा कर आंख बन्द करली.....
अच्छा एक बात बता ...देख शरमाना मत...
????????????????
प्यार करते समय कैसी भाषा पसन्द करती हैं.....
????????????
देख अब पूरा मजा लेना है तो शरमाने से काम नहीं चलेगा..
????????????
देशी भाषा पसन्द है.गन्दी गालियों वाली...वह एक गाल चूमते हुए फुसफुसाया ।
मुझे नहीं पता.....मेरे मुँह से निकला और मैनें शरमाकर अपना मुँह उसके सीने में छुपा लिया।
अच्छा मुँह से नहीं तो इशारे से बता दे..अगर हाँ तो मेरे होठ चूम ले और ना तो गाल...चल...और उसने चूची जोर से दबा दीा
आह्ह्ह धीरे..... मैं फिर से गरम होने लगी। वैसे भी जब एक बार चुदवा लिया तो शरम क्या करनी। सो बिना किसी झिझक के मैने अपने होठ उसके होठ पर रख दिये.....
वाह ये हुई न बात ....उसने जोर से भींचते हुए कहा
अच्छा एक और बात बता....देख शरमाना मत..... उसका हाथ चूत पर पहुंच गया
????????????
पहले से चुदी हुई थी ..ना.....उसने चूत दबाते हुए पूछा तो मैने भी सर हिला दिया
किसने तोडी थी मेरी रानी की सील???
अब एक बार चुदवाने बाद शरमाने की कहाँ जरूरत है.....वैसे भी मैं दिन भर के लिये तो कई बार यहाँ आता ही रहता हूं इस लिये अगर तू पूरी तरह खुल जायेगी और अपने बारे में सब कुछ बतायेगी.....तो दिन में मिलना आसान रहेगा.....बोल ना खुलकर चुदवायेगी आज....
हमारे एक किरायेदार थे उपर कमरे में.....
और पुलकित तेरा राजदार है ना.....वह झुका और होंठ चूमते हुए बोला
हाँ.....आखिर मैने भी अब मस्ती में आने लगी।
कितनी बार चोदा उस हरामी ने मेरी जान की मस्त चूत को.....
कई बार...दो साल तक चला.....मैं तो सब भुलाने की कोशिश कर ही रही थी कि तुम आगये.....
तभी मेरे लौडे को देखकर खो गयी थी ना.....
??????????

(c) 2008, www.antarvasna.com

अभी देखना ...जब रंडी की तरह चोदूंगा....मस्त हो जायेगी....खूब गन्दी गन्दी गालियां दूंगा...बुरा तो नहीं लगेगा तुझे

मैने इनकार में सर हिलाया। मुझे उसकी बातें रोमांचित कर रही थीं। मेरी चूत फिर पनियाने लगी। उसका लंड पैट के अन्दर से ही मेरी गर्दन मे घुसने की कोषिश कर रहा था।

आज डिनर बाहर लेंगे ..... उसके बाद तुझे आज पूरी रात नंगी रखूंगा और बार बार चोदूंगा...

पूरी रात ..ना बाबा ना....मैं नहीं कर सकती...कल का दर्द अभी तक नहीं गया है.....

अरे मेरी जान बहुत गर्मी है तेरी चूत में....ये कल ही महसूस कर लिया था मैंने.....

??????????? मैं मदहोश हो रही थी। उसने मेरी सलवार का नाडा खोल दिया और चूत पर हाथ फेरने लगा।

नहीं .अभी नहीं..पुलकित के आने का टाईम हो गया है.....

दरवाजा तो बन्द है ना...फिर क्या प्राब्लम है.....उसने अपना हाथ चड्डी में डाल दिया।

यहाँ नहीं....रात है ना पूरी.....

.अच्छा चल ...जो चूत चोदी है उसे एक बार दिखा तो दे बहन के लौडी.....और उसके जिद करने पर मैं उसके सामने पूरी नंगी हुई और उसने मुझे अलग अलग पोज में देखा..... फिर पुलकित के आने तक ये ही सब चलता रहा। वह हमें एक मॅहगे रेस्त्रां में ले गया। घर आने के बाद पुलकित गैस्टरूम में चला गया। गौरव भी उसके पीछे पीछे गया और जब आया तो उसके हाथ में रेज़र था...मैने उसकी ओर देखा तो बोला....

चूत चिकनी करनी है.....

पहले थोडी देर रैस्ट करलें.....

पहले नंगी हो जा...अब जो भी करेंगे नंगे ही करेंगे और उसने बाहें फैला दी तो दौड कर उससे बेल की तरह लिपट गयी। उसने खडे खडे ही मेरे कपडे उतारे और खुद भी नंगा हो गया। उसका लंड खडा था जिसे मैने हाथ में ले लिया और बडे प्यार से उसे सहलाने लगी। फिर थोडी देर तक प्यार करने के बाद उसने मुझे पलंग पर लिटाया। मैं टांगें फैला कर लेट गयी तो उसने मेरी झांटें साफ की और फिर अपनी भी. उसका लंड लोहे की रॉड की तरह तना था। वह मेरी बगल में आया तो मैं उससे बेल की तरह लिपट गयी। गौरव ने मुझे अपने उपर ऊपर खींच लिया अब मैं उसके ऊपर औंधी लेटी थी और उसका लंड जांघों के बीच में फंसा था।मैं उसे जोर जोर से चूमने लगी। थोडी ही देर में हम मस्ती में आ गये। उसने मेरे होठ अपने होठों में लिये तो मैने उसका लंड जांघों में भींच लिया। उसके दोनों हाथ मेरे चूतड दबाने लगे। मैने उसके लंड को चूत पर एडजस्ट किया तो वह चूत की दरार में अपनी मंजिल ढूडने लगा।

चूत को उसपर दया आ गयी और उसने उसे अपने आगोश में ले लिया।

उसने भी मुझे भींच लिया। मैं धीरे धीरे चूतड हिलाने लगी। थोडी देर बाद मैं लंड को चूत में समाये हुए ही उठी और बैठ गयी। लंड चूत में पूरा समा गया तो मैने उपर नीचे करना शुरू कर दिया

(c) 2008, www.antarvasna.com

आह्ह्ह ...मेरी रानी ...तू तो पक्की चुदद्कड है.....और गौरव ने मेरी चूचियां पकड ली। मैं भी अब गरम हो चुकी थी सो जोर जोर से उपर नीचे होने लगी। वह भी नीचे से लौडे को उछाल रहा था.....

और जोर से मेरी रांड.....आअह्ह्ह आह्ह,.....

उंह्ह...हूंह्ह थामैं पूरी ताकत से चूत उसके लंड पर पटक रही

शाबाश मेरी चुदद्कड ....और जोर से...बहन चोद आआह्ह्ह्ह मजा आ रहा है.....और वह भी नीचे से गांड उछालने लगा। थोडी ही देर में मैं थक गयी तो रुक गयी....

क्या हुआ..... वह चूची भींचते हुए बोला

थक गयी...और मैं उसके उपर औंधी लेट गयी....

अभी से थक गयी बहन के लौडी .....सुहागरात को खसम जब पूरी रात चोदेगा तब.... वह चूमते हुए बोला

सुहागरात को तो मुझे चुपचाप चुदवाना है....सो सीधे लेटी रहूंगी....मैने भी एक जोर का चुम्बन लेते हुए कहा। थोडी देर रैस्ट करने के बाद वह फिर मेरे उपर आगया....

रुको एक मिनिट.....

क्या हुआ.....

चूत गीली हो गयी है...इसे पौंछ लूं.....मैने चूत अन्दर तक साफ की और अपने हाथ से पकड कर लंड चूत के छेद पर सैट किया और टांगें फैला कर उपर उठा लीं। उसने दोनों हाथ मेरी बगल में जमाये और एक ही झटके में पूरा लंड उतार दिया....

आअह्ह्ह...धीरे.....

बडी टाइट हो गयी पोछने से...किसने सिखाई ये अदा..

अंकल ने...

बडा चोदू था मादर चोद.....

आअह्ह्ह...अब बस चोदना शुरु करो...रहा नहीं जा रहा....और फिर गौरव पिल पडा चूत पर....एक बार फिर पलंग की चरमराहट और मेरी आह्ह आह्ह्ह के बीच चूत पर पडने वाली पट्ट पट्ट की आवाज से कमरा गूंजने लगा।

आआह्ह्ह मेरी रानी....आआह मजा आरहा है....और फिर थोडी देर में उसने अपना लंड चूत में खाली कर दिया। इस प्रकार उस रात उसने तीन बार और चोदा। हम दोनों सुबह तक ऐसे ही नंगे पडे रहे। हमने लंच भी बाह्र लिया और फिर जाने से पहले गौरव ने एक बार और मेरी चूत को लंड के पानी से भर दिया.....शाम को वह वापस चला गया। वह तो चला गया पर मेरी चूत को फिर जगा गया।

आपको यह सच्ची कहनी कैसी लगी..... Please do write to me at pulkitjha@yahoo.com

(c) 2008, www.antarvasna.com